शीर्षक; मुरझाती कलियों का खिलखिलाते पुष्पों के रूप में सफर

ज्योत्सना सक्सेना प्रिंसिपल
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, सवना, भिंडर,उदयपुर 313607
फोन नं-9829577660
मेल आई डी,jyotsna.saxena1963@Gmail.com

स्थिति ; उदयपुर जिले के इंटीरियर में आदिवासी बहुल क्षेत्र, ऊबड़खाबड़ जमीन पर नया क्रमोन्नत स्कूल, बाहरी दुनिया से कटे अपनी दुनिया में मस्त रहने वाले मासूम बच्चे, ग्रामवासी .. सांप, नेवला, नीलगाय, बघेरा और जंगली जानवर अक्सर दिखते हैं.. सांपों का प्रसिद्द मंदिर है जहाँ झाड़फूंक से इलाज किया जाता है.. मजदूरी, पशुपालन, कृषि तथा चोरी से कच्ची शराब बनाना.. मुख्य व्यवसाय है.. कम उम्र में ही बच्चों को कमाने गुजरात भेज दिया जाता है, जातिवाद, अंधविश्वास ,बालविवाह , लिंगभेद.. भूत प्रेतों पर खूब विश्वास है.. लड़कों की अपेक्षा लड़कियों का पोषण स्तर बहुत निम्न है.. स्थानीय बोली मिश्रित मेवाड़ी भाषा बोली जाती है

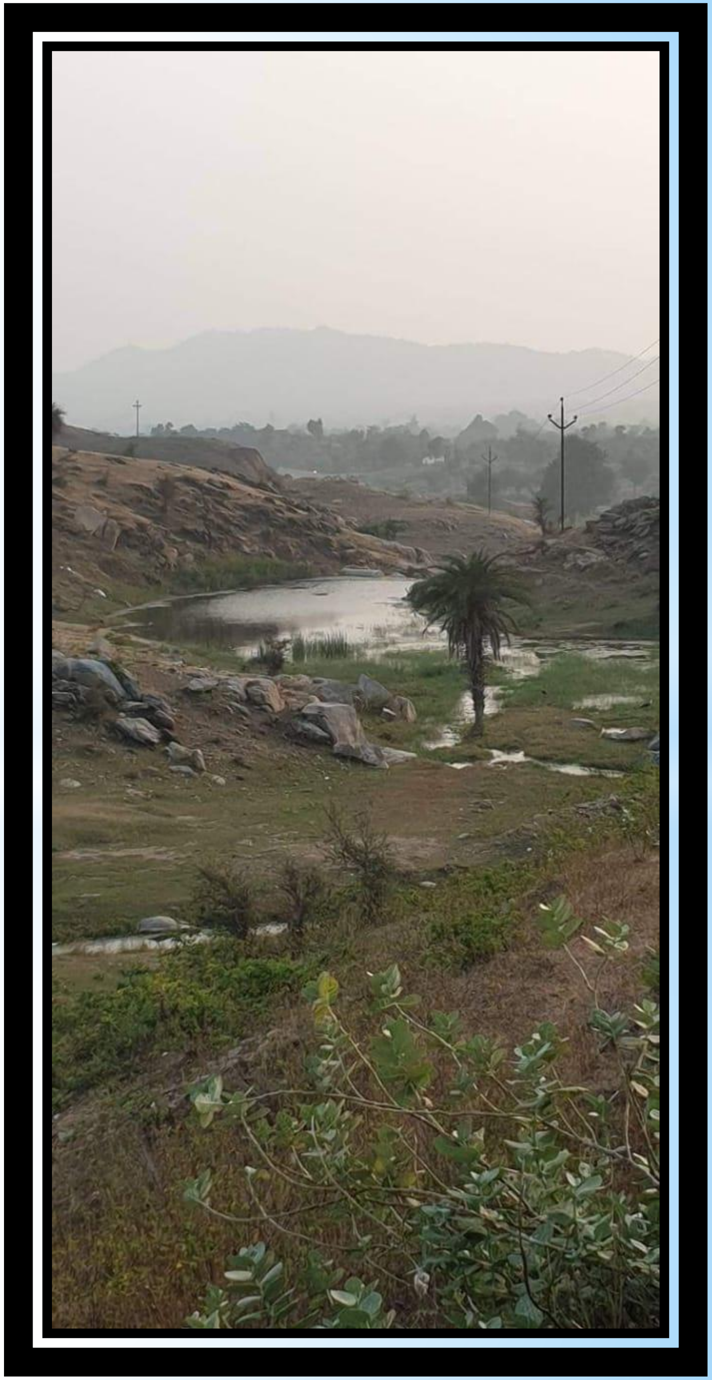

चुनौती : मेवाड़ी क्षेत्र के बच्चों विशेषकर लड़कियों की चुप्पी के क्या कारक होंगे ?

चुनौतियों के समक्ष किये गए प्रयास :

१. शिक्षा के साथ मानवतावादी दृष्टिकोण का विकास

२. क्लास में छात्रों व शिक्षकों के मध्य द्वितरफा संवाद

३. लड़कियों व लडको से अलगअलग बात कर लडको के मन में स्त्रियों के प्रति सम्मान भाव जगाना

४. अभिभावकों से मिलकर सामाजिक संरचना समझने का प्रयास बच्चों को विद्यालय में जोड़ने के प्रयास

५. छात्र छात्राओं को कक्षा में एक साथ बिठाना , एक साथ शैक्षणिक भ्रमण पर ले जाना .

६. खेल ,सांस्कृतिक कार्यक्रमों में लड़कियों को बराबरी का अवसर प्रदान करना

७. प्रोजेक्टर से सार्थक फिल्मों का प्रदर्शन

८. माताओं से बातचीत

"चुप्पी तोडना "..मुश्किल -मेट्रो सिटी जयपुर से आकर इस नए परिवेश में जहाँ की संस्कृति, भाषा, पहनावा, रहनसहन खाना पीना सब कुछ भिन्न था लेकिन शांत निश्छल बच्चों की मुखाकृतियाँ, हरियाली और प्राकृतिक दृश्य भा गए थे मुझे, मैं स्वयं उस गाँव में अजीबोगरीब प्राणी से ज्यादा कुछ न थी.. पीड़ा होती थी.. कक्षाओं में उदासीन मुरझाए बच्चों को देखकर जो सामान्य शरारतें भी नहीं करते थे.. केवल शिक्षक बोलते थे.. निष्क्रिय बच्चे बिलकुल चुप, सन्नाटा सा पसरा रहता था.. प्रेरित करने पर कुछ छात्र सजग हुए लेकिन छात्राओं ने तो मानो ठान रखा हो 'तोड़ेंगे दम मगर.. ये चुप्पी.. हम ना छोड़ेंगे'.. ठान लिया था हमारी टीम ने भी " इनके मुँह में जमे दही का छाछ बनाना है .

चुनौतियों पर जीत ; मेट्रो सिटी जयपुर से आकर इस नए परिवेश में जहाँ की संस्कृति, भाषा, पहनावा, रहनसहन खाना पीना सब कुछ भिन्न था लेकिन शांत निश्छल बच्चों की मुखाकृतियाँ, हरियाली और प्राकृतिक दृश्य भा गए थे मुझे, मैं स्वयं उस गाँव में अजीबोगरीब प्राणी से ज्यादा कुछ न थी.. पीड़ा होती थी कक्षाओं में उदासीन मुरझाए बच्चों को देखकर जो सामान्य शरारतें भी नहीं करते थे केवल शिक्षक बोलते थे, निष्क्रिय बच्चे बिलकुल चुप, सन्नाटा सा पसरा रहता था.. प्रेरित करने पर कुछ छात्र सजग हुए लेकिन छात्राओं ने तो मानो ठान रखा हो " तोड़ेंगे दम मगर..ये चुप्पी, हम ना छोड़ेंगे", ठान लिया था हमारी टीम ने भी " इनके मुँह में जमे दही का छाछ बनाना है .

कक्षा 9 th ,10 th व सीनियर क्लास के छात्र छात्राओँ को मिक्स करके बिठाना शुरू कर दिया। **कुम्भलगढ़ पिकनिक पर ले गई..** मुझे लग रहा था मेरे प्रयास रंग लाएंगे। लेकिन ये क्या। ...सकुचाते हुए विद्यालय प्रभारी मेरे पास आए और बोले " मैडम आपके शहर की संस्कृति यहाँ कारगर नहीं होगी. "एक साथ बिठाने से पिकनिक पर ले जाने से एक अलग ही माहौल पनप रहा है। ... पिकनिक के बाद जोड़े बनने लगे हैं , आप इन्हे अलग अलग ही बैठने दो " मेरा पहला प्रयास विफल हो गया था....समझ गई थी मैं ..अतिउत्साह में मैंने जल्दबाजी कर दी... 12 th के एग्जाम से तीन महीने पहले एक छात्रा के पेरेंट्स ने उसकी शादी भी करा दी ..

सैनिटरी नैपकिन वितरण-अब लड़कियों से बातचीत प्रारम्भ की थी मैंने। ..सरकार द्वारा निःशुल्क दिए जाने वाले **सैनिटरी नैपकिन** के कार्टून भरे ही रहते मारे संकोच के वे कभी लेने ही नहीं आती थीं। विद्यालय में महिला अध्यापिका ना होने के कारण मुझे बांटने थे वो **नैपकिन**।

मैंने कक्षा आठ से कक्षा बारह की छात्राओं को इकठ्ठा किया। उनकी शारीरिक संरचना के बारे में बात की। उन्हें **शारीरिक परिवर्तन , हार्मोन्स और मासिक चक्र** के विषय में रुचिकर तरीके से बताया।ये जानकर बच्चियां बड़ी खुश हुई कि ये एक सामान्य प्रक्रिया है इसका प्रतिमाह नियमित होना आवश्यक है। ये आपके स्वस्थ होने की निशानी है।

अंतरंग अंगों की स्वच्छता के बारे में व संक्रमण के बारे में जानकर खुलने लगीं। कुछ बच्चियों ने सवाल पूछकर जिज्ञासा शांत की।

एक अच्छा वातावरण निर्मित होने लगा ...योग दिवस के दिन सबकी **माताओं** से बातचीत की। आश्चर्यचकित रह गई जब उन्होंने बताया कि **नैपकिन के स्थान पर वे कपडे के भीतर रेत रखकर प्रयोग करती हैं।** उन्हें तो **नैपकिन** लेने का तरीका भी नहीं समझ आता।

* लड़कों के साथ **स्वस्थ मित्रता** कैसे करना चाहिए ? समझाना बहुत मुश्किल था क्योंकि मेरी जल्दबाजी के कारण कच्ची उम्र के पक्के प्यार के मोहजाल में कुछ बच्चियां आ चुकी थी। उनको विश्वास में लिया " मुझे सब बताओ ,मैं सही रास्ता बताउंगी तुम्हारे पेरेंट्स को नहीं बताउंगी "बात जानने पर उन्हें समझाया पहले कुछ बन जाओ। नौकरी करने शहर चली जाओ। जब अपने पैरों पर खड़ी होगी तो कोई तुम्हे नहीं रोक सकेगा। इसके लिए सीनियर क्लास उत्तीर्ण करना आवश्यक है। तरकीब काम में आने लगी, लड़कियां खुद लड़कों से दूरी बनाने लगीं, पढाई में मन भी लगाने लगीं। उनके अंदर कुछ बनने की अपने पैरों में खड़े होने की धुन जाग्रत हुई।

अब तक विद्यालय परिवार के सदस्यों में(3 से 12 शिक्षक एवम् student 350 से 600) वृद्धि हो गई थी। विद्यालय के पारिवारिक माहौल में टीम एकता के कारण बच्चियाँ अपनी पारिवारिक व् व्यक्तिगत समस्याएं शेयर करने लगी थी। स्थानीय कुरीतियों के खिलाफ जोरदार नाटक जो बच्चों ने व बच्चियों ने मिलकर तैयार किया था, देखकर मन प्रफुल्लित हुआ। **प्रार्थना सभा में गीत, कहानी व समाचारपत्र वाचन** में बढ़चढ़कर हिस्सा लेने लगी, बच्चियां। कुछ छात्राएं पढ़ने में कमजोर थी उनमे आत्मविश्वास की कमी थी वे सामने आने से बचती थीं।

उन छात्राओं के लिए शारीरिक शिक्षक सुरेश जी से बात की, पूरे स्टाफ के सहयोग से केवल छात्राओं के लिए **कक्षावार कबड्डी** मैच कराये गए। लड़किया जो कक्षा में मुंह भींचकर बैठ जाती थी वे चिंघाड़ चिंघाड़ कर प्रतिद्वंदी टीम को ललकार रही थी और मैं हतप्रभ सी बच्चियों को निहार रही थी। मन ही मन अपनी सफलता पर गौरान्वित भी थी ही और अगली योजना के प्रति आशान्वित भी। .

कबड्डी और बॉलीबॉल की टीम ने पहली बार जिलास्तर पर भाग लिया … भले ही जीत ना सकी… सलूम्बर के राष्ट्रीय बालसाहित्यकार सेमिनार में दोनों दिन हमारे 25 बच्चों की ना केवल भागीदारी हुई अपितु वाहवाही भी बटोरी
हमारे बच्चों के आर्टिकल अख़बारों में तथा शिविरा जैसी उत्कृष्ट पत्रिकाओं में जब प्रकाशित होते हैं उनसे ज्यादा ख़ुशी मुझे व् मेरे साथियों को मिलती है … अभी आगे बहुत काम और करने हैं … यात्रा अभी शेष है …thank you

ईमानदारी का पाठ

नियमानुसार बुधवार को बच्चे रंगीन कपड़ों में आते थे ..टीम के निर्णय के अनुसार अब बच्चे सफेद यूनिफॉर्म में आते हैं ।

स्कूल लीडर की भूमिका : एक स्कूल लीडर के रूप में " संवाद और सहयोग " सभी का प्रयोग किया ....बच्चियों , अभिभावकों तथा विद्यालय के शिक्षकों को शामिल किया तथा पहला प्रयास विफल होने पर भी " कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती "पंक्तियाँ याद रखी।

बदलाव की नीति :ईमानदारी से पारदर्शिता से सबको साथ लेकर चलें , मंज़िल अवश्य मिलेगी।

★ स्कूल गतिविधियां ★

उच्च माध्यमिक विद्यालय, सवना
ब्लॉक -भीण्डर, जिला-उदयपुर (राज.)
सामुदायिक बाल सभा
स्वागत एवं अभिनन्दन
SDMC,SMC एवं विद्यालय परिवार, सवना (भीण्डर)

उच्च माध्यमिक विद्यालय, सवना

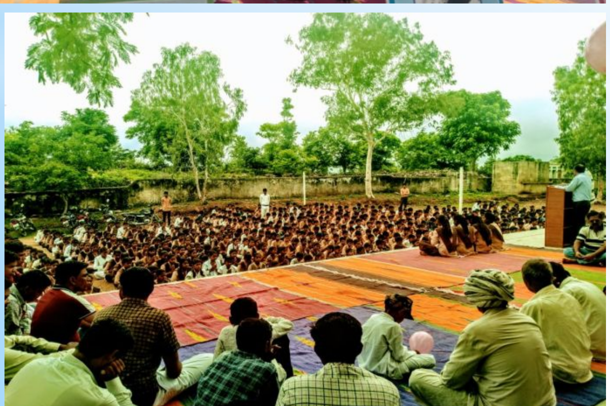

2019/12/2 15:07